पाठ-क्रम

7th

1. मंज़िल पर बढ़नेवालों को 8
2. हंस और कौआ 15
3. मन जीते जग जीत 21
4. नाम की इच्छा 26
5. पहले अपना अध्ययन करो 31
6. बूँदी 36
7. आम और गालिब 42
8. विश्वराज्य 47
9. रंगोली 52
10. रोबोट और कृत्रिम बुद्धि 57
11. आर्ट का पुल 64
12. जीवन-सत्य 70
13. इस्तीफ़ा 75
14. सिनेमा का स्वप्नलोक 80
15. सुभाषचंद्र बोस के पत्र 85
16. तुम्हीं मिटाओ मेरी उलझन 93

कार्य-पत्र (1 से 4) 98

आदर्श परीक्षा प्रश्न-पत्र (1 और 2) 106

Scanned with OKEN Scanner

3 मन जीते जग जीत

पाठ-योजना

पाठ का नाम	मन जीते जग जीत
कालांश संख्या	4 से 8
शिक्षण प्रक्रिया	Student Led
पाठ का उद्देश्य	• छात्रों में स्वस्थ प्रतियोगिता की भावना का विकास करना • समानता का भाव विकसित करना • कठिन परिश्रम का महत्व बताना • पाठ का भावानुसार वाचन सिखाना • कठिन शब्दों का शुद्ध उच्चारण और अर्थ बताना • तत्सम-तद्भव, देशज शब्द, रि, री और ऋ के शब्द तथा विशेषण के भेदों का परिचय देकर अभ्यास करवाना • पाठ में आए मुहावरों के अर्थ बताना • चर्चा, अनुच्छेद-लेखन, पत्र-लेखन आदि गतिविधियों द्वारा सृजनात्मक क्षमता का विकास करना
पाठ में आने वाले विषय	अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, तत्सम-तद्भव, देशज शब्द, री-रि ऋ में अंतर, विशेषण के भेद, चर्चा, अनुच्छेद-लेखन, पत्र-लेखन, पत्रिका के लिए लेख
शिक्षण सामग्री	पाठ्यपुस्तक, आई-बुक एनिमेशन, वेब सपोर्ट, टेस्ट जेनरेटर
मानक/अमानक शब्द	प्रतिद्वंद्वी/प्रतिद्वंद्वी, नंबर/नम्बर
आरंभ— चर्चा एवं समूह वाचन, कौशल— पठन, वाचन-श्रवण	• पाठ के शीर्षक और चित्र पर चर्चा करवाएँ—चित्र में कहाँ का दृश्य दिखाया गया है? किस समय का दृश्य है? दूसरे चित्र में बच्चे क्या कर रहे हैं? पाठ के शीर्षक से विषय वस्तु के बारे में क्या पता चलता है? आदि। • पाठ का सार बताएँ। • Smart board पर पाठ का एनिमेशन दिखाएँ और वाचन सुनवाएँ। • छोटे-छोटे समूहों में कक्षा को बाँटें और पाठ का भावानुसार वाचन करवाएँ। • जब एक समूह एक अंश का वाचन कर ले तो शिक्षक दूसरे समूहों से उस अंश पर आधारित छोटे-छोटे प्रश्न पूछें। इससे छात्रों में एकाग्रता बढ़ेगी और पाठ ग्राह्य होगा। • वाचन के समय कठिन प्रतीत होने वाले शब्दों को Board पर लिखें। • शिक्षक इन शब्दों का सही उच्चारण, अर्थ और विशिष्ट प्रयोग बताएँ। • पाठ की प्रासंगिकता के बारे में बच्चों को चर्चा करने दें। उनके विचार जानें और अपने भी विचार रखें।
मध्य कौशल— लेखन, वाचन	• माइंड मैप द्वारा पाठ की पुनरावृत्ति करवाएँ। • 'पढ़िए' शीर्षक के अंतर्गत दिए गए शब्दों का उच्चारण करवाएँ। श्रुतलेख भी करवा सकते हैं। बच्चे एक-दूसरे के लिखे गए शब्दों की वर्तनी जाँचें। • 'बताइए' और 'सोचिए' के अंतर्गत दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा करें। बच्चे मौखिक रूप से उत्तर दें। • 'लिखिए' शीर्षक के अंतर्गत प्रश्न 1, 4 और व्याकरण संबोध में दिए प्रश्नों के हल पुस्तक में ही करवाएँ। प्रश्न 2 और 3 पर कक्षा में चर्चा करें और कॉपी में हल लिखवाएँ।

Scanned with OKEN Scanner

	• विषय संवर्धन गतिविधियों के अंतर्गत छात्रों के समूह बनवाएँ। प्रत्येक समूह अपनी इच्छानुसार गतिविधि का चुनाव करे और कक्षा में प्रस्तुत करे। • 'क्या होता यदि' शीर्षक के अंतर्गत दी गई स्थिति पर सामूहिक चर्चा करवाएँ और मुख्य बिंदुओं को कॉपी में नोट करने को कहें।
अंत कौशल— लेखन, वाचन	Websupport से Worksheet के प्रिंट लेकर बच्चों को वितरित करें और गृहकार्य के रूप में करके लाने को कहें। कक्षा के सभी बच्चे एक-दूसरे की Worksheet की जाँच करें अथवा शिक्षक सही उत्तर कक्षा में बुलवाएँ और छात्रों को स्वमूल्यांकन करने दें।
शिक्षण संप्राप्तियाँ	• छात्रों में स्वस्थ प्रतियोगिता की भावना को बल मिलेगा। • समानता का भाव जागेगा। • कठिन परिश्रम का महत्व समझ जाएँगे। • पाठ का शुद्ध और भावानुसार वाचन कर सकेंगे। • पाठ में आए व्याकरणिक बिंदुओं का अभ्यास होगा। • मुहावरों के अर्थ बता सकेंगे और अपने वाक्यों में प्रयोग कर सकेंगे। • सृजनात्मक क्षमता का विकास होगा।

पाठ का सार

प्रसिद्ध लोकोक्ति 'मन के हारे हार है, मन जीते जग जीत' पर आधारित प्रस्तुत पाठ डा. आलमशाह खान द्वारा लिखा गया है। यह पाठ बताता है कि योग्यता ही सफल होने का मापदंड है। शॉर्टकट से अर्जित की गई सफलता टिकाऊ नहीं होती और हमें प्रतियोगिता से भी बाहर कर देती है।

शानू और अमित एक ही विद्यालय के छात्र थे। अमित एक साधारण घर का लड़का होने के बावजूद होशियार था। शानू अमीर घर का था, होशियार भी था लेकिन अमित से परीक्षाओं में मात खा गया। हार से शानू के आत्मसम्मान को चोट पहुँची और वह अमित से बदला लेने की योजना बनाने लगा। आगामी परीक्षाओं में गलत तरीकों का प्रयोग कर शानू अव्वल आ गया। स्कूल की परंपरा थी कि कक्षा के हर टेस्ट में पहली रैंक और 60 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले छात्र की फ़ीस माफ़ थी और किताबें भी मुफ़्त थीं। टेस्ट में पिछड़ जाने पर गरीब अमित फ़ीस नहीं जुटा पाया और उसे स्कूल छोड़ना पड़ा। अमित के जाने के बाद शानू को अपनी गलती का अहसास हुआ। उसे पता चल गया कि मज़बूत प्रतिद्वंद्वी न होने पर अव्वल आने का कोई फ़ायदा नहीं। उसने अमित से माफ़ी माँगी और पश्चाताप के रूप में उसकी फ़ीस भी भरी।

अभ्यास

पढ़िए

1. **मानक वर्तनी एवं वाचन (उच्चारण)**

दिए गए शब्दों की शुद्ध वर्तनी कक्षा में बोर्ड पर लिखवाएँ या कॉपी में लिखने को कहें। शब्दों का कक्षा में शुद्ध उच्चारण करवाएँ।

2. **बताइए**

क. अमित के आगे शानू धूल चाट गया, कैसे?

उ. पहले मासिक इम्तहान और फिर तिमाही परीक्षा में अमित ने हमेशा प्रथम आने वाले शांतनु से ज़्यादा अंक प्राप्त किए। इस तरह अमित के आगे शानू धूल चाट गया।

ख. पहली रैंक पाना अमित की मजबूरी क्यों थी?

उ. स्कूल में यह परंपरा थी कि अपनी कक्षा के हर टेस्ट में पहली रैंक पाने वाले की ट्यूशन फ़ीस नहीं लगती थी। अमित एक गरीब परिवार से था और ट्यूशन फ़ीस नहीं दे सकता था। अतः स्कूल में बने रहने के लिए पहली रैंक पाना मजबूरी बन गया था।

Scanned with OKEN Scanner

ग. अमित को टी.सी. क्यों नहीं दिया जा सकता था?

उ. अमित ने स्कूल से जाने के लिए दरख्वास्त लगाई थी पर पिछली फ़ीस वगैरह के बाकी रहते उसे टी.सी. नहीं दिया जा सकता था।

घ. साठ प्रतिशत से ऊपर अंक पाने पर क्या होता था?

उ. साठ प्रतिशत से ऊपर अंक पाने वाले विद्यार्थी के लिए फ़ीस तो माफ़ होती थी साथ ही निःशुल्क किताबों की व्यवस्था भी थी।

3. **सोचिए (मूल्यपरक प्रश्न)**

क. प्रतिस्पर्धा (Competition) क्यों ज़रूरी है? स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के क्या लाभ होते हैं?

उ. प्रतिस्पर्धा हमारी क्षमताओं और योग्यता की परख करती है साथ ही व्यक्तित्व में निखार लाती है। स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के निम्नलिखित लाभ होते हैं—

- प्रतिस्पर्धा से और अधिक परिश्रम की भावना का विकास होता है।
- विषय की समझ व गहराई का विकास होता है।
- हमारा संकल्प और दृढ़ होता है।
- प्रतिस्पर्धा से आंतरिक अनुशासन विकसित होता है।
- विषय के संदर्भ में तर्क क्षमता विकसित होती है। (छात्र अपने विचारों का विस्तार करें।)

ख. प्रतियोगिता के माध्यम से हम स्वयं को दूसरों की तुलना में श्रेष्ठ बनाने का प्रयास करते हैं। कैसे?

उ. प्रतियोगिता के माध्यम से हम स्वयं को दूसरों की तुलना में श्रेष्ठ बनाने का प्रयास करते हैं। हम आगे बढ़ने के लिए अधिक परिश्रम करते हैं, संबंधित क्षेत्र में अधिक जानकारी अर्जित करने का प्रयास करते हैं। आगे बढ़ने की ललक हमारी तार्किक क्षमता और ज्ञान का विकास करती है। (छात्र अपने विचारों का विस्तार करें।)

लिखिए

1. **गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए—**

लड़के तो .... शानू के लिए भी।

क. लड़के किसे देखकर आश्चर्य में पड़ गए थे? ii. साधारण अमित ✓

ख. अमित ने किसकी भारी रकम जुटाई थी? iv. पहली फ़ीस की ✓

ग. किस कारण पढ़ाई-लिखाई में अमित से आगे बढ़ना कठिन है? iv. लगन और समझदारी के ✓

घ. किन बातों से यह पता लग रहा था कि अमित ठसकवाले घर का नहीं था?

उ. अमित के चेहरे-मोहरे, चाल-ढाल, कॉपी-बैग और यूनिफ़ार्म के लिहाज़ से नहीं लगता था कि वह ठसकवाले घर का है।

ङ. 'ठसकवाले' घर का क्या अर्थ है?

उ. ठसकवाले घर का अर्थ है कि ऐसा परिवार जो धनी हो साथ ही साथ समाज में उसकी प्रतिष्ठा भी हो।

2. **संक्षेप में उत्तर लिखिए—**

क. शानू कैसा लड़का था?

उ. शानू बहुत प्यारा और परिश्रमी बालक था। उसने जीवन में हर जगह, हर मोड़ पर आगे और अव्वल रहने की सीख ली थी। वह पढ़ाई, खेल, डिबेट और लेखन आदि में सबसे आगे था।

ख. छमाही परीक्षा में शानू ने नकल के कौन-से हथकंडे अपनाए?

उ. छमाही परीक्षा में शानू ने नकल के कई हथकंडे अपनाए थे; जैसे—गणित के परचे में उसने कैलक्यूलेटर का इस्तेमाल किया था। अध्यापकों और साथी छात्रों की आँख बचाकर इंग्लिश के परचे में भी दस नंबर की नकल मारी थी।

ग. शानू अमित के घर क्यों गया?

उ. शानू को अमित की अनुपस्थिति में प्रथम स्थान प्राप्त करके भी संतोष नहीं हुआ। उसके मन में सफलता की कोई उमंग नहीं जागी। अमित के सामने पैंसठ अंक आने पर भी वह द्वितीय रहता था। अब बासठ अंकों में भी वह प्रथम स्थान पर था। उसे समझ आ गया था कि कमज़ोर मुकाबले की जीत से ज़्यादा अच्छा मज़बूत प्रतिद्वंद्वी से

Scanned with OKEN Scanner

पिछड़ना है। फिर उसने फ़रेब से अमित का प्रथम रैंक छीना था जिसके कारण अमित को स्कूल छोड़ना पड़ा था। अमित को वापिस स्कूल बुलाने के लिए वह उसके घर गया।

घ. फ़ीस जमा कराना शानू का अमित पर उधार था या उपकार? क्यों?

उ. फ़ीस जमा कराना शानू का अमित पर उधार था कोई उपकार नहीं क्योंकि स्वाभिमानी अमित ने उपकार के रूप में रुपए लेने से इनकार कर दिया था।

3. **विस्तार से उत्तर लिखिए—**

क. शानू के लिए पहली रैंक जहाँ शान की बात थी वहीं अमित के लिए अपने होने न होने की चुनौती। क्यों?

उ. शानू एक संपन्न परिवार से संबंध रखता था। उसे विद्यालय की फ़ीस, किताबें-कॉपियों आदि की कोई चिंता नहीं थी। साथ ही साथ वह एक परिश्रमी और होशियार छात्र भी था। इस कारण पहली रैंक पाना उसके लिए शान की बात थी। दूसरी तरफ़ अमित एक बेहद गरीब परिवार से ताल्लुक रखता था। उसके पास स्कूल की फ़ीस और किताबों वगैरह के लिए पैसे नहीं थे। प्रथम रैंक पाने पर उसकी ट्यूशन फ़ीस माफ़ हो सकती थी और साठ प्रतिशत से अधिक अंक लाने पर उसे मुफ़्त में किताबें-कॉपियाँ मिल सकती थी। इसीलिए प्रथम रैंक अमित के लिए कक्षा में अपने होने न होने की चुनौती थी।

ख. अमित ने स्कूल से जाने की दरख्वास्त क्यों लगाई?

उ. अमित ने स्कूल से जाने के लिए दरख्वास्त इसलिए लगाई क्योंकि स्कूल के नियम के अनुसार वह अपनी कक्षा के हर टेस्ट में प्रथम स्थान प्राप्त नहीं कर पाया था।

ग. छमाही परीक्षा में अमित से आगे रहने के बाद भी शानू क्यों उदास था?

उ. शानू ने छमाही परीक्षा में प्रथम आने के लिए हर हथकंडे को अपनाया था। उसने गणित के परचे में कैलक्यूलेटर का इस्तेमाल किया था। सबकी निगाह से बचकर इंग्लिश के परचे में भी दस नंबर की नकल की थी। इन सब अनैतिक उपायों से वह कक्षा में प्रथम आ गया और अमित द्वितीय जिस कारण अमित को स्कूल छोड़ना पड़ा। अमित के जाने के बाद शानू को अहसास हुआ कि उसकी जीत ने तो अमित का स्कूल में बने रहने का आधार ही उखाड़ फेंका। उसे अपनी बेईमानी पर बहुत पश्चाताप हुआ। उसके जाने के बाद कोई भी मज़बूत प्रतिद्वंदवी कक्षा में नहीं था। प्रथम आने का कोई उल्लास अब न बचा था इसलिए वह उदास था।

घ. पहली रैंक लाने के बाद भी शानू क्यों चाहता था कि अमित स्कूल में वापस आए?

उ. पहली रैंक लाने के बाद भी शानू चाहता था कि अमित वापस आए क्योंकि उसकी समझ में आ गया था कि दगा-फ़रेब से पाया गया दरजा बेकार है और कमज़ोर मुकाबले की जीत में भी वह मज़ा नहीं, जो मज़बूत प्रतिद्वंद्वी के सामने पिछड़ जाने में है।

ङ उधार और उपकार में क्या अंतर है? अपने शब्दों में लिखिए।

उ. उधार दिया गया धन या वस्तु वापस लिए जाते हैं। उधार की कुछ शर्तें भी हो सकती हैं। उधार चुकाते समय कई बार उधार की रकम के साथ ब्याज भी दिया जाता है। जबकि उपकार किसी पर दया करके किया जाता है। उपकार में दिया गया धन या वस्तु वापिस नहीं ली जाती।

आशय स्पष्ट कीजिए

✧ दगा-फ़रेब से पाया गया दरजा बेकार है और कमज़ोर मुकाबले की जीत में भी वह मज़ा नहीं, जो मज़बूत प्रतिद्वंद्वी के सामने पिछड़ जाने में है।

उ. इस पंक्ति का आशय यह है कि सच्ची प्रतियोगिता और सच्चा प्रतियोगी छल-कपट की अवधारणा पर आधारित नहीं होते हैं। जहाँ दगा-फ़रेब होता है, वहाँ प्रतियोगिता नहीं होती है। जब प्रतियोगिता में प्रतिद्वंद्वी बराबर का होता है, तो हार और जीत का मुकाबला रोचक होता है। जहाँ जीत की खुशी होती है वहीं हार का गम भी नहीं होता।

4. **सही विकल्प पर ✓ का निशान लगाइए—**

क. फ़्री-शिप का अर्थ है— ii. फ़ीस माफ़ ✓

ख. शानू ने अमित की कितनी फ़ीस जमा करवाई? iv. सात सौ रुपये ✓

Scanned with OKEN Scanner

4 नाम की इच्छा

पाठ-योजना

पाठ का नाम	नाम की इच्छा
कालांश संख्या	4 से 8
शिक्षण प्रक्रिया	Student Led
पाठ का उद्देश्य	• सोच-समझकर काम करने की सीख देना • नाम कमाने के चक्कर में विपरीत परिस्थितियों में पड़ने से सचेत करना • पाठ का भावानुसार शुद्ध उच्चारण के साथ वाचन सिखाना • कठिन शब्दों का अर्थ और शुद्ध उच्चारण सिखाना • आगत ध्वनि, एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द तथा क्रियाविशेषण का परिचय देकर अभ्यास कराना • विभिन्न गतिविधियों द्वारा सृजनात्मक क्षमता का विकास करना
पाठ में आने वाले विषय	विसर्ग वाले शब्द, आगत ध्वनि के शब्द, एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द, क्रियाविशेषण, मुहावरे, परिचर्चा, लेख, सूची निर्माण, डायरी लेखन
शिक्षण सामग्री	पाठ्यपुस्तक, आई-बुक एनिमेशन, वेब सपोर्ट, टेस्ट जेनरेटर
मानक/अमानक शब्द	आरंभ/आरम्भ, प्रबंध/प्रबन्ध, उत्तर/उत्तर
आरंभ— चर्चा एवं समूह वाचन, कौशल— पठन, वाचन-श्रवण	• पाठ के शीर्षक और चित्र पर चर्चा करवाएँ— पाठ के शीर्षक से इसकी विषयवस्तु के बारे में क्या पता चलता है? पाठ में दिए गए चित्र से क्या पता चल रहा है? क्या आपने कभी ऐसा काम किया जिससे आपका नाम हुआ हो? आपको कब-कब नाम कमाने की इच्छा हुई है? आदि। • पाठ का सार समझाएँ। • Smart board पर पाठ का एनिमेशन दिखाएँ और वाचन सुनवाएँ। • कक्षा को छोटे-छोटे समूहों में बाँटें और पाठ के छोटे-छोटे खंडों का वाचन करवाएँ। उन खंडों पर आधारित प्रश्न दूसरे समूहों से पूछें। • वाचन में कठिन प्रतीत होने वाले शब्दों का शुद्ध उच्चारण और अर्थ बताएँ। • पाठ की प्रासंगिकता के बारे में बच्चों को चर्चा करने दें। उनके विचार जानें और अपने भी विचार रखें।
मध्य कौशल— लेखन, वाचन	• माइंड मैप द्वारा पाठ की पुनरावृत्ति करवाएँ। • 'पढ़िए' शीर्षक के अंतर्गत दिए गए शब्दों का उच्चारण करवाएँ। श्रुतलेख भी करवा सकते हैं। बच्चे एक-दूसरे के लिखे गए शब्दों की वर्तनी जाँचें। • 'बताइए' और 'सोचिए' के अंतर्गत दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा करें। बच्चे मौखिक रूप से उत्तर दें। • 'लिखिए' शीर्षक के अंतर्गत प्रश्न 1, 4 और व्याकरण संबोध में दिए प्रश्नों के हल पुस्तक में ही करवाएँ। प्रश्न 2 और 3 पर कक्षा में चर्चा करें और कॉपी में हल लिखवाएँ। • विषय संवर्धन गतिविधियों के अंतर्गन छात्रों के समूह बनवाएँ। प्रत्येक समूह अपनी इच्छानुसार गतिविधि का चुनाव करे और कक्षा में प्रस्तुत करे। • 'क्या होता यदि' शीर्षक के अंतर्गत दी गई स्थिति पर सामूहिक चर्चा करवाएँ और मुख्य बिंदुओं को कॉपी में नोट करने को कहें।

Scanned with OKEN Scanner

अंत कौशल— लेखन, वाचन	Websupport से Worksheet के प्रिंट लेकर बच्चों को वितरित करें और गृहकार्य के रूप में करके लाने को कहें। कक्षा के सभी बच्चे एक-दूसरे की Worksheet की जाँच करें अथवा शिक्षक सही उत्तर कक्षा में बुलवाएँ और छात्रों को स्वमूल्यांकन करने दें।
शिक्षण संप्राप्तियाँ	• छात्रों को सोच-समझकर काम करने की सीख मिलेगी। • नाम कमाने की लगन में मूर्खतापूर्ण कार्य का अंजाम जान सकेंगे। • अपनी योग्यता और सामर्थ्य के अनुसार संतोष करना सीखेंगे। • पाठ का शुद्ध उच्चारण के साथ वाचन कर सकेंगे। • कठिन शब्दों के अर्थ जानकर बातचीत में प्रयोग कर सकेंगे। • पाठ में आए व्याकरणिक बिंदुओं का अभ्यास हो जाएगा। • परिचर्चा, लेख, सूची निर्माण, डायरी लेखन आदि गतिविधियों द्वारा सभी कौशलों और सृजनात्मक क्षमता का विकास होगा।

पाठ का सार

यशपाल द्वारा लिखित पाठ 'नाम की इच्छा' के मुख्य पात्र गुरदास की इच्छा थी कि लोग उसका नाम जानें। अखबार में उसका नाम छपे। लेकिन बचपन से आज तक उसकी यह इच्छा पूरी नहीं हुई। कक्षा हो, खेल का मैदान हो, नौकरी हो या फिर मोहल्ले के लोग—सभी जगह वह खुद को उपेक्षित महसूस करता था। नाम कमाने की इसी इच्छा के चलते एक दिन समाचार-पत्र पढ़ते-पढ़ते वह एक कार के नीचे आ गया। अस्पताल में पहुँचकर उसे लगा कि अब तो वह मशहूर हो ही जाएगा। कार का मालिक उसे कुछ हर्जाना देकर मामला सुलझाना चाहता था। उसने कार के मालिक को बताया कि वह अपना नाम अखबार में छपवाना चाहता है। कार का मालिक वकील था। उसने गुरदास को कटघरे में खड़ा करके पूछताछ की। अगले दिन गुरदास का नाम अखबार में छपा—अदालत ने उसे हर्जाना देने से इनकार कर दिया क्योंकि गुरदास नाम छपवाने के लिए जानबूझकर गाड़ी के सामने आ गया था।

अभ्यास

पढ़िए

1. **मानक वर्तनी एवं वाचन (उच्चारण)**

   दिए गए शब्दों की शुद्ध वर्तनी कक्षा में बोर्ड पर लिखवाएँ या कॉपी में लिखने को कहें। शब्दों का कक्षा में शुद्ध उच्चारण करवाएँ।

2. **बताइए**

   क. बचपन से गुरदास का क्या सपना था?

   उ. बचपन से ही गुरदास का सपना था कि 'सब लोग उसे जानें और चहुँओर उसका नाम हो।

   ख. अनंतराम को स्कूल में सब कैसे जान गए?

   उ. स्कूल में ड्रिल करते समय अचानक अनंतराम बेहोश होकर गिर गया। दो-तीन लड़कों ने उसे उठाकर बरामदे में लिटाया। उसे पानी के छींटे मारकर होश में लाया गया और हेडमास्टर साहब ने उसे पुचकारा। दो लड़के और ड्रिल मास्टर उसे ताँगें में बैठाकर घर छोड़कर आए। स्कूल भर में अनंतराम के बेहोश हो जाने की खबर फैल गई। इस तरह इस घटना के बाद स्कूल में सब उसे जान गए।

   ग. गुरदास अपनी तुलना किससे और क्यों करता था?

   उ. गुरदास अपनी तुलना वीर शिवाजी से करता था। शिवाजी द्वारा अनेक किले जीतने के वर्णन के काल्पनिक दृश्य गुरदास के मस्तिष्क में सचित्र होकर चक्कार काटते रहते थे। वह अपने को शिवाजी की तरह बहादुर समझता था और उनकी तरह प्रसिद्ध होना चाहता था।

Scanned with OKEN Scanner

घ. गुरदास ने अखबार क्यों खरीदा?

उ. गुरदास प्राय: अखबार खरीदता नहीं था परंतु अपने मोहल्ले की खबर छपी होने के कारण उसने चार पैसे में अखबार ले लिया।

ङ. मोटर दुर्घटना में आहत गुरदास को अदालत ने क्या कहकर हरजाना दिलवाने से मना कर दिया?

उ. मोटर दुर्घटना में आहत गुरदास को अदालत ने हरजाना दिलाने से इनकार कर दिया क्योंकि उसके बयान से साबित हो गया था कि अखबार में नाम छपवाने के लिए ही वह जान-बूझकर मोटर के सामने आ गया था।

3. **सोचिए (मूल्यपरक प्रश्न)**

◇ क्या अखबार में नाम छपनेवाले ही प्रसिद्ध व महान होते हैं? उदाहरण सहित उत्तर दीजिए।

उ. ऐसा नहीं है कि केवल अखबार में नाम छपनेवाले लोग ही प्रसिद्ध व महान होते हैं। अखबार में उन लोगों के नाम भी छपते हैं जो बुरे काम करते हैं। और कुछ लोग ऐसे हैं जो महान काम करते हैं लेकिन उनके नाम और काम अखबार में नहीं छपते। ऐसे लोगों की प्रशंसा उनके आस-पास रहनेवाले लोग करते हैं। अखबार में नाम न छपने के बावजूद वे प्रसिद्ध व महान हो जाते हैं।

लिखिए

1. **गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए—**

इतिहास को .... चोट पहुँचा देता।

क. गुरदास को इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाओं की तारीखें और सन क्यों याद नहीं रहते थे? i. याददाश्त कमज़ोर थी। ✓

ख. इतिहास की क्लास में गुरदास को शाबाशी क्यों नहीं मिलती थी? iii. तारीखें और सन याद न रहने के कारण ✓

ग. गुरदास की महत्वाकांक्षा क्या थी? i. नाम कमाना ✓

घ. इतिहास के मास्टर साहब प्राय: क्या कहते थे?

उ. इतिहास के मास्टर साहब प्राय: कहते थे कि जो लोग मरकर भी अपना नाम ज़िंदा छोड़ जाते हैं। उनका जीवन ही सार्थक होता है।

घ. किन लोगों का जीवन सार्थक होता है?

उ. जो लोग मरकर भी अपना नाम ज़िंदा छोड़ जाते हैं, उनका जीवन ही सार्थक होता है।

2. **संक्षेप में उत्तर लिखिए—**

क. अनंतराम के बेहोश होकर गिरने पर गुरदास क्यों दुखी था?

उ. अनंतराम के बेहोश होने पर गुरदास सोच रहा था कि अगर वह अनंतराम की जगह बेहोश होकर गिर पड़ता, वैसे ही उसे चोट आती तो अच्छा होता। सब लोग उसे जान जाते और उसकी देखभाल होती। इसी कारण गुरदास दुखी था।

ख. गणित, व्याकरण और अंग्रेज़ी की कक्षा में गुरदास शिक्षक की नज़रों में क्यों न चढ़ पाता था?

उ. गुरदास एक औसत छात्र था। न तो वह बहुत होशियार था और न ही बिलकुल नालायक। गणित, व्याकरण और अंग्रेज़ी की कक्षा में कुछ छात्र उससे पहले सवाल हल कर लेते थे। मास्टरजी शाबाशी देते हुए उनका नाम पुकारते थे और कुछ छात्र कुछ नहीं करते थे तो मास्टरजी उनका नाम लेकर उन्हें बेंच पर खड़ा कर देते थे। इसलिए गुरदास शिक्षक की नज़रों में न चढ़ पाता था।

ग. लाला जी का नाम अखबार में छपने पर गुरदास को कैसा लगा? उसने क्या कहकर मन को समझाया?

उ. लाला जी का नाम फ़ोटो सहित अखबार में छपने पर गुरदास 'आह' भरकर रह गया। उसे बहुत दुख हुआ। उसने अपने मन को समझाया कि इतना धन और यश तो केवल पूर्वजन्म के कर्मों के फल से ही पाया जा सकता है।

Scanned with OKEN Scanner

घ. अस्पताल में घायल पड़े हुए गुरदास को उत्साह का अनुभव क्यों हुआ?
उ. अस्पताल में घायल पड़े गुरदास की रात में जब नींद टूटी तो दर्द फिर होने लगा। साथ ही खयाल आया कि अब शायद अखबार में उसका नाम छप ही जाए। दर्द में भी उसे एक उत्साह का अनुभव हुआ और दर्द भी कम मालूम होने लगा।
ङ. क्या गुरदास की महत्वाकांक्षा पूरी हुई?
उ. गुरदास की महत्वाकांक्षा तो पूरी हुई लेकिन उसे शर्मिंदगी भी उठानी पड़ी।

3. **विस्तार से उत्तर लिखिए—**

क. इतिहास में विशेष रुचि होने पर भी गुरदास को कक्षा में कभी शाबाशी क्यों नहीं मिली?
उ. इतिहास में गुरदास की विशेष रुचि थी। शेरशाह सूरी और खिलजी की चढ़ाइयाँ और अकबर के शासन के वर्णन उसके दिमाग में सचित्र घूमते रहते थे। वह इन शासकों और इतिहास की घटनाओं को अपनी कल्पना में तो जीता था परंतु उसे महत्वपूर्ण घटनाओं की तारीखें और सन याद नहीं रहते थे और वह अध्यापक के प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पाता था। इसलिए गुरदास को कक्षा में कभी शाबाशी नहीं मिल पाती थी।
ख. वकील साहब की सहानुभूति से झुकी आँखें सहसा क्यों खुल गईं?
उ. वकील साहब चाहते थे कि मामला कचहरी जाए। वे जानते थे कि ड्राइवर ने जानबूझकर गुरदास को टक्कर नहीं मारी थी। फिर भी गुरदास के ज़ख्मी होने पर उन्हें गुरदास से पूरी सहानुभूति थी। वे उसके इलाज के पैसे देने को भी तैयार थे। परंतु जब उन्हें पता चला कि गुरदास अपना नाम अखबार में छपवाना चाहता है तो उन्हें कचहरी में बचने का रास्ता सूझ गया और उनकी सहानुभूति से झुकी आँखें सहसा खुल गईं।
ग. वकील साहब ने गुरदास की अखबार में नाम छपवाने की इच्छा का किस तरह फ़ायदा उठाया?
उ. वकील साहब पहले तो गुरदास के प्रति सहानुभूति प्रकट कर रहे थे। वे चाहते थे कि गुरदास को कुछ आर्थिक सहायता भी मिल जाए लेकिन जब उन्हें गुरदास की अखबार में नाम छपवाने की इच्छा के बारे में पता चला तो उन्होंने गुरदास से कचहरी में जिरह के समय यह साबित कर दिया कि गुरदास ने यह सब जान-बूझकर अखबार में नाम छपवाने के लिए किया था। इस तरह वे गुरदास को हरजाना देने से भी बच गए और दोषी साबित भी नहीं हुए।
घ. गुरदास की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।
उ. गुरदास की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

- वह कल्पना जीवी था। वह अपनी कल्पना में अपने आप को शिवाजी की तरह ऊँची, नोकदार पगड़ी पहने, छोटी दाढ़ी रखे और वैसा ही चोगा पहने, तलवार लिए सेना के घोड़े पर सरपट दौड़ता चला जाता देखता था।
- गुरदास नाम का भूखा था। वह चाहता था कि किसी तरह उसे भी लोग जानें-पहचानें।
- वह इतिहास में विशेष रुचि रखने वाला औसत छात्र था।
- वह स्वभाव से भोला था तभी तो वकील साहब की टेढ़ी जिरह को न समझ सका।

आशय स्पष्ट कीजिए—

क. गुरदास बेचारा दोनों तरफ़ से बीच में रह जाता।
उ. इस पंक्ति का आशय यह है कि गुरदास न तो शरारत ही करता था और न ही होशियार छात्रों की तरह शाबाशी ले पाता था। मास्टरजी या तो होशियार छात्रों को नाम लेते या शरारती छात्रों का। गुरदास बीच में रह जाता था।
ख. गुरदास ने अखबार में अपना मुँह ढाँप लिया। किसी को अपना मुँह कैसे दिखाता।
उ. यद्यपि गुरदास जानबूझकर वकील की मोटर से नहीं टकराया था, पर घायल होने पर उसे लगा कि शायद उसका नाम अखबार में छप गया होगा। वकील चालाक थे। उसकी इस इच्छा का फ़ायदा उठाकर उन्होंने कचहरी में यह साबित कर दिया कि अखबार में नाम छपवाने के लिए वह जान-बूझकर गाड़ी से टकराया था। यही बात जब अखबार में छपी तो गुरदास ने शर्मिंदगी के कारण अपना मुँह अखबार में छुपा लिया।

4. **उचित विकल्प पर ✓ का निशान लगाइए—**

क. रहमान साहब ने एंबुलेंस क्यों मँगवाई थी— iii. अपनी और मोहल्ले की रक्षा के लिए ✓
ख. गुरदास मोटर से क्यों टकरा गया? ii. अखबार पढ़ने में मगन होने के कारण ✓

Scanned with OKEN Scanner

सभा पर्व

1. राजसूय यज्ञ एवं जरासंध

इंद्रप्रस्थ में प्रतापी पांडव न्यायपूर्वक शासन कर रहे थे। युधिष्ठिर तथा उसके भाइयों व साथियों की इच्छा हुई कि राजसूय यज्ञ करके सम्राट के पद को प्राप्त किया जाए। इस बारे में सलाह करने के लिए उन्होंने द्वारका से श्रीकृष्ण को बुलवाया। श्रीकृष्ण तुरंत ही इंद्रप्रस्थ पहुँच गए। युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण से कहा कि साथियों का कहना है कि मुझे राजसूय यज्ञ करके सम्राट पद को प्राप्त करना चाहिए। लेकिन राजसूय यज्ञ तो वही कर सकता है, जो सारे संसार के राजाओं का पूज्य हो और उनके द्वारा सम्मानित हो। इस बारे में आप ही मुझे सलाह दीजिए।

श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर की बात शांति से सुनी और कहा—''मगध देश के नरेश जरासंध ने सब राजाओं को जीतकर अपने अधीन किया हुआ है। सभी उसके नाम से डरते हैं। शिशुपाल जैसे शक्ति संपन्न व पराक्रमी राजा भी उसकी अधीनता को स्वीकार कर चुके हैं और उसकी छत्रछाया में रहना पसंद करते हैं। इसलिए जरासंध के रहते हुए कोई भी सम्राट पद प्राप्त नहीं कर सकता है। जब महाराज उग्रसेन का नासमझ पुत्र कंस जरासंध की पुत्री से विवाह करके उसका साथी बन गया था, तब मैंने और मेरे भाई-बंधुओं ने मगध नरेश जरासंध के विरुद्ध युद्ध किया था। तीन वर्ष तक उसकी सेनाओं से युद्ध करते रहने के पश्चात् आखिर हम हार गए थे। फिर हमें मथुरा को छोड़कर दूर द्वारका में जाकर नगर व दुर्ग बनाकर रहना पड़ा। चाहे आपके सम्राट पद प्राप्त करने से दुर्योधन और कर्ण को कोई आपत्ति न भी हो, किंतु फिर भी जरासंध से इसकी उम्मीद करना बेकार है। युद्ध किए बिना जरासंध इस बात को मान नहीं सकता है। उसने आज तक पराजय का नाम नहीं सुना है। ऐसे अजेय व बलवान राजा जरासंध के जीते-जी आप राजसूय यज्ञ नहीं कर पाएँगे। उसने जिन राजाओं-महाराजाओं को बंदीगृह में डाला हुआ है, पहले उन्हें किसी-न-किसी उपाय से छुड़ाना होगा। जब ऐसा हो जाएगा तभी आपके लिए राजसूय यज्ञ करना साध्य होगा।''

श्रीकृष्ण की इन बातों को सुनकर युधिष्ठिर उनसे कहने लगे—''आपका कहना बिलकुल ठीक है। इस विशाल जगत में कितने ही राजाओं के लिए जगह है और कितने ही नरेश अपने-अपने राज्य का शासन करते हुए संतुष्ट रह सकते हैं। किंतु लालसा ऐसी आग है, जो कभी बुझ नहीं सकती है। इसलिए मुझे लगता है कि मेरी भलाई इसी में है कि मैं सम्राट पद प्राप्त करने का विचार त्याग दूँ और जो है उसी को लेकर संतुष्ट रहूँ।''

युधिष्ठिर की यह विनयशीलता भीम को पसंद नहीं आई। उसने कहा—''श्रीकृष्ण की नीति-कुशलता, अर्जुन का शौर्य और मेरा शारीरिक बल यदि तीनों मिल जाएँ, तो ऐसा कोई कार्य नहीं, जो हम नहीं कर सकेंगे। हम तीनों जब एक साथ चल पड़ेंगे, तो जरासंध की शक्ति को अवश्य ही चूर करके लौटेंगे। आप इस बात की शंका न करें।''

भीम की यह बात सुनकर श्रीकृष्ण ने कहा—''यदि भीम और अर्जुन दोनों सहमत हों, तो हम तीनों एक साथ जाकर उस अन्यायी जरासंध की जेल में पड़े हुए अनेक निर्दोषी राजाओं को मुक्त करा सकेंगे।''

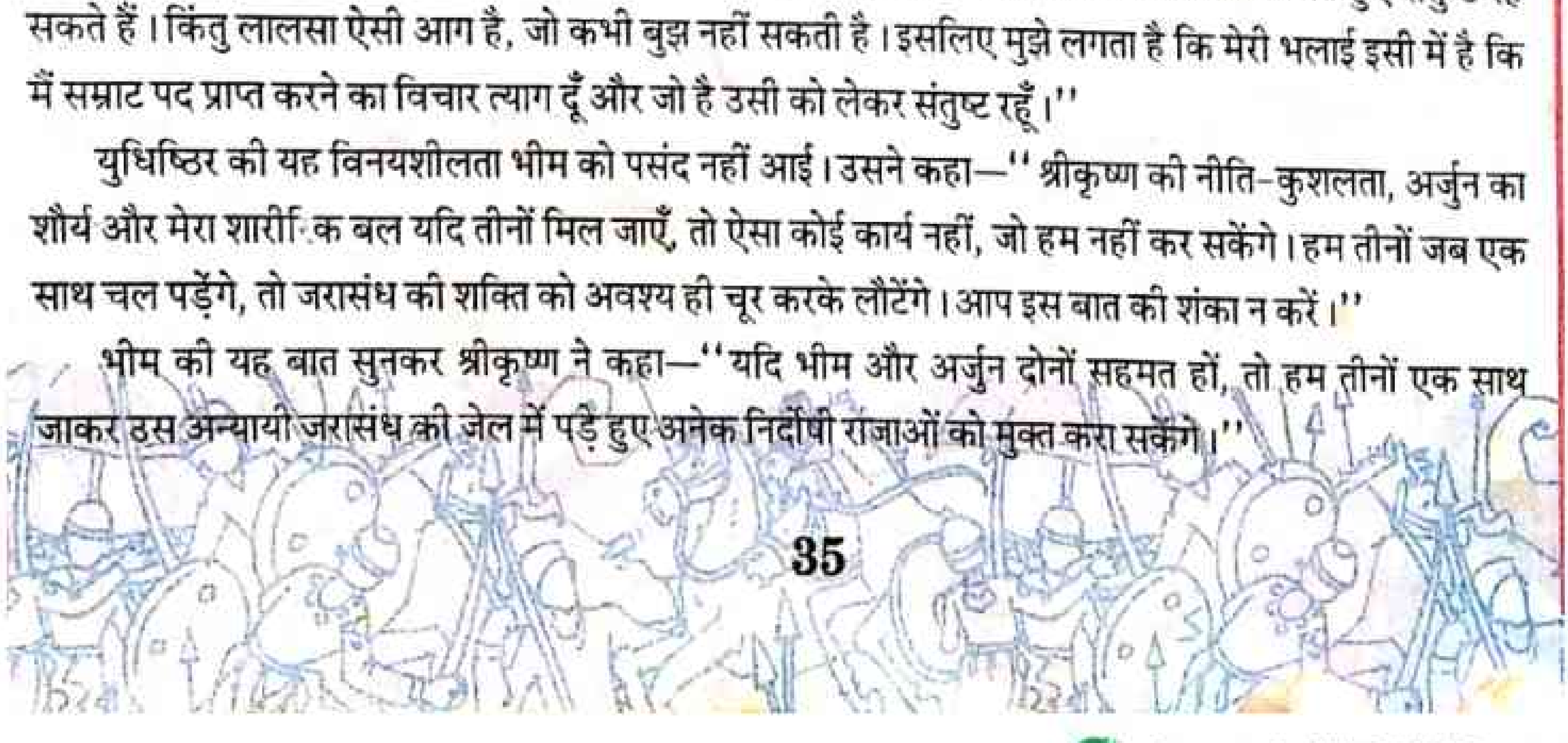

Scanned with OKEN Scanner

युधिष्ठिर को फिर से निमंत्रण स्वीकार करना पड़ा। युधिष्ठिर हस्तिनापुर आ... खेला। इस बार खेल में यह शर्त रखी गई थी कि हारा हुआ दल अपने भाइयों के साथ बारह वर्ष तक वनवास करेगा। उसके बाद एक वर्ष अज्ञातवास में रहेगा। यदि इस एक वर्ष में उनका पता लग जाएगा, तो उन सबको बारह वर्ष वनवास फिर से भोगना होगा। इस बार फिर से युधिष्ठिर हार गए और सभी पांडव अपने किए गए वायदे के अनुसार वन में चले गए।

कठिन शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अधीनता	गुलामी	छत्रछाया	सहारा
असह्य	जो सहन न किया जा सके	उपभोग	व्यवहार, सुख की सामग्री
साध्य	सामर्थ्य, सरल	ईजाद	आविष्कार
अभ्यागत	सम्मुख आया हुआ अतिथि	चौसर	चौपड़ का खेल
दुर्दशा	बुरी दशा	कानाफूसी	कान में धीरे से कही हुई बात
कुमंत्रणा	बुरी सम्मति		

प्रश्न-अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. युधिष्ठिर को राजसूय यज्ञ करने की सलाह किसने दी? और क्यों?
2. जरासंध का वध किसने और क्यों किया?
3. द्यूत क्रीड़ा के विषय में विदुर और युधिष्ठिर का क्या कहना था?
4. पांडवों को द्यूत क्रीड़ा के क्या-क्या दुष्परिणाम भुगतने पड़े?
5. द्रौपदी के अपमान पर भीम ने क्या प्रतिज्ञा की?
6. विकर्ण और युयुत्सु कौन थे? द्रौपदी के प्रति उनका व्यवहार कैसा था?
7. द्यूत क्रीड़ा के लिए युधिष्ठिर को पुनः क्यों बुलाया गया था? इसका क्या परिणाम निकला?

II. सही कथन के सामने (✓) का तथा गलत के सामने (×) का चिह्न लगाइए :

1. दुर्योधन जुआ खेलने में निपुण था। ☐
2. जरासंध के पुत्र का नाम सहदेव था। ☐
3. दुर्योधन ने विकर्ण को द्रौपदी को सभा भवन में लाने के लिए कहा। ☐
4. दूसरी बार युधिष्ठिर को जुआ खेलने के बुलाने के लिए एक दूत को भेजा गया। ☐
5. शकुनि दुर्योधन का मामा था। ☐
6. प्रातिकामी दुर्योधन का सारथी था। ☐

Scanned with OKEN Scanner

वन पर्व

1. पांडवों का वन-गमन एवं धृतराष्ट्र की चिंता

जब पांडव द्रौपदी को साथ लेकर वन की ओर प्रस्थान करने लगे, तो धृतराष्ट्र ने विदुर को बुलाया और पूछा — "विदुर! मैं कुछ देख नहीं सकता हूँ। तुम्हीं बताओ कि पांडु के बेटे और द्रौपदी कैसे जा रहे हैं?"

विदुर ने कहा—"कुंती-पुत्र युधिष्ठिर अपना चेहरा ढककर जा रहे हैं। भीमसेन अपनी दोनों भुजाओं को निहारते हुए, अर्जुन अपने हाथ में कुछ बालू लिए उसे बिखरते हुए, नकुल और सहदेव अपने सारे शरीर पर धूल रमाए हुए युधिष्ठिर के पीछे-पीछे जा रहे हैं। द्रौपदी ने अपने बिखरे हुए केशों से पूरा मुख ढक लिया है और आँसू बहाती हुई, युधिष्ठिर के पीछे-पीछे चल रही है।"

यह सुनकर धृतराष्ट्र की चिंता और आशंका पहले से भी अधिक प्रबल हो गई।

विदुर बार-बार धृतराष्ट्र से पांडवों के साथ संधि करने का आग्रह करते रहते थे और इसी भाँति उन्हें उपदेश भी दिया करते थे। विदुर की बुद्धिमानी का धृतराष्ट्र पर काफ़ी प्रभाव था। इसलिए शुरू-शुरू में वह उनकी बातें सुन लिया करते थे। किंतु विदुर के मुख से बार-बार ऐसी ही बातें सुनते-सुनते वे ऊब गए थे।

एक दिन विदुर ने फिर से जब वही बात शुरू कर दी, तो धृतराष्ट्र झुँझलाकर उनसे कहने लगे—"विदुर! अब मुझे तुम्हारे परामर्श की आवश्यकता नहीं है। अगर तुम चाहो, तो पांडवों के पास चले जाओ।" यह कहकर धृतराष्ट्र बड़े क्रोध के साथ विदुर के उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना अंतःपुर में चले गए। विदुर ने मन-ही-मन सोचा कि अब इस वंश का सर्वनाश निश्चित है।

विदुर ने तुरंत अपना रथ जुतवाया और उस पर चढ़कर वन में उस तरफ़ चल पड़े, जहाँ पांडव अपने वनवास का काल व्यतीत कर रहे थे। विदुर के चले जाने पर धृतराष्ट्र और भी चिंतित हो गए। उन्हें अपने किए पर पछतावा होने लगा। वे सोचने लगे कि उन्होंने विदुर को भगाकर भारी भूल कर दी है। यह सोचकर धृतराष्ट्र ने संजय को बुलाया और कहा—"संजय! मैंने अपने प्रिय विदुर को बहुत बुरा-भला कह दिया था, जिससे क्रोधित होकर वह पांडवों के पास वन में चला गया है। तुम जाओ और किसी भी तरह समझा-बुझाकर उसे मेरे पास वापस ले आओ।"

धृतराष्ट्र की बात मानकर संजय वन में पांडवों के आश्रम में जा पहुँचे। संजय ने विदुर से बड़ी विनम्रता से कहा—"धृतराष्ट्र अपनी भूल पर पछता रहे हैं। यदि आप वापस नहीं लौटेंगे, तो वे अपने प्राण त्याग देंगे। इसलिए आप अभी लौट चलिए।"

यह सुनकर विदुर पांडवों से विदा लेकर हस्तिनापुर के लिए चल पड़े। हस्तिनापुर पहुँचकर जब वे धृतराष्ट्र के समक्ष गए, तो उन्होंने बड़े प्यार से उन्हें गले लगा लिया और प्रसन्न होकर बोले—"निर्दोष विदुर! मैं तुम्हें जो भी बुरा-भला कह बैठा हूँ, उसको तुम बुरा मत मानना और मुझे क्षमा कर देना।"

Scanned with OKEN Scanner

प्रश्न-अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. विदुर धृतराष्ट्र को छोड़कर पांडवों के पास वन में क्यों चले गए ?
2. द्रौपदी ने रोते हुए श्रीकृष्ण से क्या कहा ? श्रीकृष्ण ने उसे कैसे दिलासा दिया ?
3. भीम की भेंट हनुमान से कैसे हुई ?
4. गंधर्वों और कौरवों के बीच युद्ध क्यों हुआ ?
5. यक्ष-प्रश्न से प्राप्त किन्हीं पाँच शिक्षाओं का उल्लेख कीजिए।
6. द्रौपदी के पास एक 'अक्षयपात्र' था, जिसका भोजन समाप्त नहीं होता था। यदि तुम्हारे पास भी एक ऐसा ही तो तुम क्या करोगे ?
7. यक्षराज ने एक-एक करके पाँचों पांडवों से एक ही बात कौन-सी कही ?

II. निम्नलिखित शब्दों में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

दुर्वासा ऋषि, सुभद्रा, नकुल, संजय, भीम, हनुमान, पांचाल देश

1. धृतराष्ट्र ने .... को विदुर को बुलाने के लिए भेजा।
2. भीम को वानर के रूप में .... मिले।
3. श्रीकृष्ण अपने साथ अर्जुन की पत्नी .... और उसके पुत्र अभिमन्यु को भी द्वारका पुरी ले गए।
4. धृष्टद्युम्न द्रौपदी के पुत्रों को लेकर .... चला गया।
5. द्रौपदी ने .... से फूल लाने के लिए कहा।
6. युधिष्ठिर ने .... की बहुत आवभगत की।
7. युधिष्ठिर ने यक्ष से .... को जीवित कर देने को कहा।

4

शब्द-विवेक

शब्द-विचार

Morphology

ऊपर दो संवाद हैं, परंतु शब्द अनेक हैं; जैसे— बेटा, माँ, पढ़ाई, अभ्यास आदि। इन सभी शब्दों का कोई न कोई अर्थ है। प्रत्येक शब्द वर्णों के मेल से बना है। वर्णों में स्वर और व्यंजन शामिल हैं। यदि इन शब्दों में वर्णों का स्थान-परिवर्तन कर दिया जाए तो वह शब्द नहीं कहलाएगा; जैसे— 'बेटा' का 'टाबे' या 'मैंने' का 'नेमैं' कर देने से वर्णों का मेल तो है, परंतु अर्थ प्राप्त नहीं हो रहा। अतः कहा जा सकता है—

दो या दो से अधिक वर्णों का सार्थक मेल ही शब्द कहलाता है।

इस आधार पर शब्द के दो भेद किए गए हैं— 1. सार्थक शब्द 2. निरर्थक शब्द।

1. **सार्थक शब्द**— सार्थक शब्द का अर्थ है— अर्थ सहित यानी जो शब्द अर्थयुक्त हों; जैसे—घर, नमक, अजगर, गुलाब, अध्यापक आदि। इन सभी शब्दों का अर्थ है। इन शब्दों का उच्चारण करते ही हमारे मस्तिष्क में इनके चित्र उभरते है।
2. **निरर्थक शब्द**— निरर्थक शब्द का अर्थ है— अर्थ रहित यानी जिस शब्द का कोई अर्थ न निकले, जो अर्थहीन हो; जैसे—पानी-वानी, चाय-वाय, रोटी-शोटी आदि। इन शब्द-युग्मों (जोड़ों) में पहला शब्द सार्थक है और दूसरा निरर्थक। भाषा में गति लाने के लिए इनका प्रयोग किया जाता है।

शब्दों के भेद

शब्द-भेद विभिन्न आधारों पर किए जाते हैं—

1. उत्पत्ति के आधार पर
2. रचना के आधार पर
3. व्याकरण अथवा प्रयोग के आधार पर
4. अर्थ के आधार पर

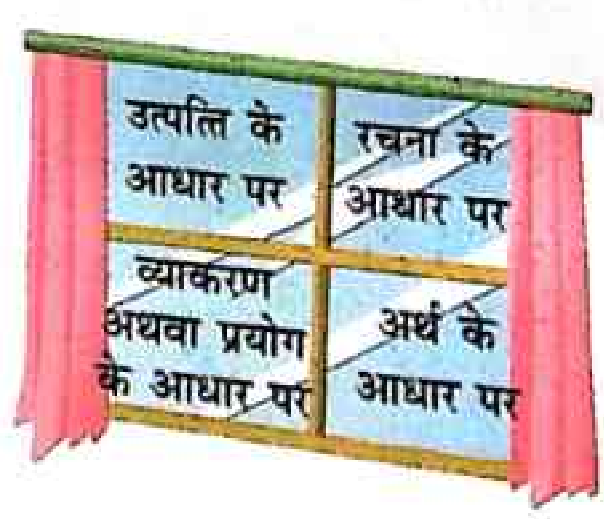

Scanned with OKEN Scanner

अर्थ के आधार पर शब्दों के प्रकार

शब्द पूर्णतः सामाजिक होते हैं। देश, काल, स्थितियों के कारण शब्दों के अर्थ में परिवर्तन आता है। कभी-कभी तो शब्द मूल अर्थ को बिलकुल छोड़ देते हैं और उनका अलग ही अर्थ हमारे सामने आता है, जैसे— प्रवीण का अर्थ 'वीणा बजाने में कुशल' होता था, परंतु अब इसका अर्थ बदल गया है। कुछ शब्दों के अनेक अर्थ हो जाते हैं। अर्थ के आधार पर शब्दों के निम्नलिखित भेद किए जाते हैं—

अर्थ के आधार पर शब्द-भेद

- अनेक शब्दों के लिए एक शब्द
- पर्यायवाची शब्द
- अनेकार्थी शब्द
- विलोम शब्द
- श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द
- शब्द-युग्म
- एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द

क. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द One word for many words

भाषा की सबसे बड़ी विशेषता है, उसका संक्षिप्त होना अर्थात कम शब्दों में बड़ी से बड़ी बात प्रभावशाली ढंग से कह देना। यह तभी संभव है, जब हम बड़े या लंबे वाक्यांशों अथवा अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग करें; जैसे—

नभ में विचरण करने वाला
नभचर

जल में जन्म लेने वाला
जलज

जहाँ छात्र निवास करते हैं
छात्रावास

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द के कुछ उदाहरण—

1. जिसका आदि न हो — अनादि
2. जिसका ईश्वर में विश्वास हो — आस्तिक
3. जिसका कोई शत्रु न हो — अजातशत्रु
4. जिसके वास का पता न हो — अज्ञातवास
5. जिसका अंत न हो — अनंत
6. जिसका ईश्वर में विश्वास न हो — नास्तिक
7. दूसरों के कार्य में बाधा डालना — हस्तक्षेप
8. साथ पढ़ने वाला — सहपाठी
9. नीचे लिखा हुआ — निम्नलिखित
10. ऊपर कहा हुआ — उपर्युक्त
11. साधारण नियम से भिन्न — अपवाद
12. प्रतिदिन होने वाला — दैनिक
13. वर्ष में एक बार होने वाला — वार्षिक
14. पत्तों से बनी कुटी — पर्णकुटी
15. जिसे टाला न जा सके — अटल
16. मन द्वारा चाहा गया — मनचाहा
17. जो सदा रहे — शाश्वत
18. बड़ा भाई — अग्रज
19. जिसे अक्षरों का ज्ञान न हो — निरक्षर
20. जो कभी न मरे — अमर
21. जिसके माँ-बाप न हों — अनाथ
22. जो भविष्य में आने वाला हो — आगामी
23. इस लोक से संबंधित — लौकिक, ऐहिक
24. जानने की इच्छा रखने वाला — जिज्ञासु

Scanned with OKEN Scanner

13. शेर — केशी, सिंह, मृगराज
14. हिरण — मृग, कुरंग, सारंग
15. कौआ — काक, काग, वायस
16. साँप — सर्प, भुजंग, फणी

प्रकृति से संबंधित शब्दों के पर्यायवाची

1. पेड़ — वृक्ष, पादप, द्रुम
2. उपवन — उद्यान, वाटिका, बाग
3. नदी — तरंगिणी, सरिता, तटिनी
4. सागर — रत्नाकर, उदधि, समुद्र
5. पानी — जल, वारि, नीर, तोय
6. पर्वत — नग, भूधर, शैल, पहाड़
7. सुबह — भोर, प्रातःकाल, सवेरा
8. कमल — पंकज, जलज, नीरज
9. आकाश — नभ, गगन, अंबर, आसमान
10. हवा — वायु, समीर, पवन
11. दिन — दिवस, अहन, वासर, वार
12. रात — निशा, रजनी, रात्रि, यामिनी
13. अग्नि — पावक, आग, अनल, वह्नि
14. किनारा — कूल, तट, कगार, तीर

रिश्ते-नाते-संबंध सूचक शब्दों के पर्यायवाची

1. नौकर — सेवक, अनुचर, दास
2. नौकरानी — सेविका, दासी, अनुचरी
3. बाल — बच्चा, बालक, लड़का
4. बहन — भगिनी, सहोदरा, दीदी, जीजी
5. युवक — युवा, तरुण, जवान
6. युवती — तरुणी, प्रभदा, रमणी
7. रिश्ता — संबंध, नाता, ताल्लुक
8. स्त्री — औरत, महिला, वनिता, वामा, भामा
9. पिता — जनक, पापा, अब्बा
10. माता — अंबा, महतारी, अम्मा
11. पत्नी — दारा, वामा, अर्धांगिनी
12. पति — भर्ता, वल्लभ, स्वामी
13. पुत्र — तनय, सुत, बेटा, लड़का
14. मनुष्य — मानव, नर, आदमी, मनुज
15. पुत्री — सुता, बेटी, तनया, आत्मजा

धर्म-देवी-देवता संबंधी शब्दों के पर्यायवाची

1. विष्णु — दामोदर, जनार्दन, चतुर्भुज, हृषीकेश
2. सरस्वती — गिरा, वाणी, भारती, शारदा
3. ब्रह्मा — विधि, विधाता, प्रजापति
4. दुर्गा — कराली, स्कंदमाता, गौरी, शिवा,
5. काली — कपालिनी,भवानी, महाकाली
6. कृष्ण — श्याम, केशव, गिरिधर, गोपाल
7. अप्सरा — देवांगना, सुरबाला, देवबाला
8. कुबेर — धनेश, यक्षराज, धनेश्वर, धनपाल
9. यमुना — कालिंदी, रविसुता, श्यामा
10. इंद्र — सुरेश, सुरेंद्र, महेंद्र, सुरपति

अवस्था-भाव-स्थिति संबंधी शब्दों के पर्यायवाची

1. बचपन — बाल्यावस्था, लड़कपन, बालपन
2. बुढ़ापा — ज़रा, वृद्धावस्था, जीर्णावस्था
3. यौवन — युवावस्था, तारुण्य, जवानी
4. आनंद — आमोद-प्रमोद, हर्ष, उल्लास
5. सुंदर — चारु, मनोहर, ललित, कमनीय
6. प्रेम — प्यार, प्रीति, मुहब्बत, नेह
7. दुख — व्यथा, वेदना, पीड़ा, कष्ट
8. स्वस्थ — भला, चंगा, तंदुरुस्त
9. शर्म — लाज, लज्जा, संकोच
10. व्याधि — बीमारी, मर्ज़, रोग

Scanned with OKEN Scanner

घ. विलोम शब्द Antonyms

विलोम शब्द का अर्थ है—विपरीत, उलटा।

परस्पर विरोधी (विपरीत) अर्थ वाले शब्दों को विलोम अथवा विपरीतार्थक शब्द कहते हैं।

अग्रज-अनुज

हँसना-रोना

यहाँ एक ही भाव अथवा अर्थ को स्पष्ट करने वाले अलग-अलग विलोम शब्द दिए जा रहे हैं। इससे शब्द-भंडार में वृद्धि तो होगी ही, साथ ही यह स्पष्ट होगा कि तत्सम शब्द का विलोम तत्सम, तद्भव का तद्भव और देशज का देशज ही होता है; जैसे—

तत्सम — क्रय-विक्रय (बेचना ठीक नहीं होगा) | तद्भव — खरीदना-बेचना (विक्रय ठीक नहीं होगा)

विदेशी — आज़ादी-गुलामी (परतंत्र ठीक नहीं होगा) | देशज — चिकना-खुरदरा (रुक्ष ठीक नहीं होगा)

कुछ विलोम शब्द इस प्रकार होंगे—

1.	घटना - बढ़ना	जमा - घटा	आय - व्यय
2.	जड़ - चेतन	जीव - अजीव	सजीव - निर्जीव
3.	स्वतंत्र - परतंत्र	गणतंत्र - राजतंत्र	आज़ादी - गुलामी
4.	पक्ष - विपक्ष	विरोध - समर्थन	वादी - प्रतिवादी
5.	आहार - निराहार	शाकाहारी - मांसाहारी	खाद्य - अखाद्य
6.	सभ्य - असभ्य	जंगली - पालतू	आगे - पीछे
7.	जीवित - मृत	जीवन - मृत्यु	जीना - मरना
8.	गरमी - सरदी	शीत - उष्ण	ठंडा - गरम
9.	खामोशी - आवाज़	मौन - मुखर	चुप्पी - बोली
10.	क्रेता - विक्रेता	खर्चा - आमदनी	दुकानदार - ग्राहक
11.	तोड़ना - जोड़ना	ध्वंस - निर्माण/सृजन	विनाशक - सर्जक
12.	विराट - लघु	सूक्ष्म - स्थूल	पतला - गाढ़ा/मोटा
13.	ऊपर - नीचे	जोड़ना - घटाना	कम - ज़्यादा
14.	पाप - पुण्य	धर्म - अधर्म	गुणवान - दोषपूर्ण

Scanned with OKEN Scanner

शब्द-रचना

5 उपसर्ग

Prefix

विद्यालय में सुरेश का अनुज दीपक उपवन में अधपका अमरूद तोड़कर खा रहा था। सुरेश अपने हमउम्र साथियों के साथ खेल रहा था। तभी वाइस प्रिंसिपल ने वहाँ आकर उन्हें समझाया।

उपर्युक्त वाक्यों में रंगीन छपे शब्द, शब्दों और शब्दांशों से मिलकर बने हैं— अनु+ज, उप+वन, अध+पका, हम+उम्र और वाइस+प्रिंसिपल। इनमें क्रमशः अनु, उप, अध, हम और वाइस के कारण दूसरे शब्दांश या शब्द— ज, वन, पका, उम्र और प्रिंसिपल के अर्थ में अंतर आ गया है। मूल शब्द में अंतर लाने वाले इन शब्दांशों को ही उपसर्ग कहा जाता है।

जो शब्दांश किसी शब्द या शब्दांश के पहले जुड़कर उसके अर्थ में विशेषता उत्पन्न कर देता है अथवा अर्थ में कोई परिवर्तन ला देता है, उसे उपसर्ग कहा जाता है।

जैसे— यदि 'पुत्र' शब्द में 'सु' या 'कु' जोड़ दिया जाए तो शब्द बनेगा 'सुपुत्र' अथवा 'कुपुत्र' जिसका अर्थ होगा 'अच्छा पुत्र' अथवा 'बुरा पुत्र'।

उपसर्ग वास्तव में शब्द होते हुए भी शब्द नहीं होते, इन्हें शब्दांश कहा जाता है क्योंकि इनका प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं किया जा सकता। अधिकतर इनका प्रयोग पूर्ण व सार्थक शब्दों के साथ होता है, पर (कभी-कभी) इनका प्रयोग शब्दांश के साथ भी होता है और नए-पूर्ण शब्द बनते हैं; जैसे— अनु + ज = अनुज (अनु उपसर्ग है और ज शब्दांश है।)

हिंदी भाषा में अधिकांश उपसर्ग संस्कृत भाषा से लिए गए हैं, परंतु संस्कृत के साथ-साथ हिंदी के अपने उपसर्ग भी हैं। अरबी-फ़ारसी तथा अंग्रेज़ी भाषा के उपसर्ग भी प्रचलन में हैं।

नीचे विस्तार से उपसर्ग, उपसर्गों के अर्थ और उदाहरण दिए जा रहे हैं—

संस्कृत के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
1. अ, अन्	निषेध	अनर्थ, अनागत, अचूक, अज्ञान, अटल, अडिग, अतुलनीय, अधर्म, अनाथ, अपवित्र, अनादि, अनंत।

Scanned with OKEN Scanner

अभ्यास

वर्णनात्मक प्रश्न (Descriptive Questions)

1. उपसर्ग और मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए— *(Applying)*

कुरूप	.... + ...	आचरण	.... + ...	नियम	.... + ...
विज्ञान	.... + ...	परिग्रह	.... + ...	परिपूर्ण	.... + ...
परामर्श	.... + ...	बेअक्ल	.... + ...	आहार	.... + ...
पुरातन	.... + ...	संशोधन	.... + ...	अधिकरण	.... + ...
प्रवाह	.... + ...	सद्गति	.... + ...	दुराग्रह	.... + ...
अपव्यय	.... + ...	प्रतिवाद	.... + ...	अभिनय	.... + ...

2. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में उचित उपसर्ग लगाकर वाक्य पूरे कीजिए— *(Analyzing, Applying)*

i. .... (राज्य) हमारा जन्मसिद्ध .... (कार) है।

ii. तुम बहुत .... (किस्मत) हो कि तुम्हें ऐसे माँ-बाप मिले।

iii. तुम्हें जब भी काम हो .... (खटके) मेरे पास चले आना।

iv. थोड़ा खाया-पिया करो, बहुत .... (बल) होते जा रहे हो।

v. विवेक कल हुई हवाई .... (घटना) में घायल हो गया।

vi. सौरभ को .... (जली) हालत में अस्पताल में भरती करवाया गया।

vii. मौसम के बदलते ही मच्छरों की .... (मार) हो गई है।

viii. हिंदी .... (भाग) में दस अध्यापक हैं।

ix. झारखंड अपने समृद्ध भू .... (साधन) के लिए जाना जाता है।

3. निर्देशानुसार उत्तर छाँटकर (✓) का निशान लगाइए— *(MCQs)*

i. 'अध्यादेश' शब्द में लगा उपसर्ग है—
क. अ ☐ ख. अध ☐ ग. अधि ☐ घ. अति ☐

ii. 'निर्वाह' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है—
क. नि ☐ ख. निर् ☐ ग. निर ☐ घ. निस् ☐

iii. निम्नलिखित में से किस शब्द में 'अधि' उपसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है?
क. अधिवक्ता ☐ ख. अधिनायक ☐ ग. अध्यक्ष ☐ घ. अभिप्राय ☐

iv. निम्नलिखित में से 'दुर्' उपसर्ग से निर्मित शब्द कौन-सा है?
क. दुरात्मा ☐ ख. दुर्जन ☐ ग. दुर्भाग्य ☐ घ. ये सभी ☐

v. 'अतिक्रमण' शब्द में कौन-सा उपसर्ग है?
क. अव ☐ ख. अधि ☐ ग. अति ☐ घ. अभि ☐

vi. निम्नलिखित में से किस शब्द में उपसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है?
क. उपसचिव ☐ ख. अपहरण ☐ ग. प्रतिध्वनि ☐ घ. भौगोलिक ☐

vii. 'दुर्लभ' शब्द में लगा उपसर्ग है—
क. दु ☐ ख. दुर ☐ ग. दुर् ☐ घ. दुस ☐

viii. 'संवाद' शब्द में लगा उपसर्ग है—
क. स ☐ ख. सम ☐ ग. सम् ☐ घ. संम् ☐

Scanned with OKEN Scanner

6 प्रत्यय

Suffix

कल हम सब मेला देखने गए। मेले की सजावट देखते ही बनती थी। ननिहाल से आया ममेरा भाई और चाची भी साथ थीं। वहाँ जादूगर और नर्तक सबका मनोरंजन कर रहे थे।

यहाँ सज+आवट, नानी+हाल, मामा+ऐरा, चाचा+ई, जादू+गर, नृत (नृत्य)+अक—धातु या मूल शब्द के बाद में लगे शब्दांश प्रत्यय हैं। इन प्रत्ययों के जुड़ने से धातुओं/मूल शब्दों के अर्थ में परिवर्तन आ गया है।

शब्दों या शब्दांशों के अंत में लगकर उनके अर्थ में परिवर्तन लाने वाले शब्दांश प्रत्यय कहलाते हैं।

प्रत्यय के मुख्य दो भेद होते हैं—

1. कृत् प्रत्यय
2. तद्धित प्रत्यय

1. कृत् प्रत्यय (कृदंत)

जो प्रत्यय धातुओं अथवा क्रियाओं के अंत में लगते हैं, वे कृत् प्रत्यय कहलाते हैं। इनके योग से बने शब्दों को कृदं (कृत्+अंत) कहते हैं; जैसे— राखन + हारा = राखनहारा, घट + इया = घटिया, लिख + आवट = लिखावट आदि

कृत् प्रत्यय पाँच प्रकार के हो सकते हैं—

क. कर्तृवाचक

ख. कर्मवाचक

ग. करणवाचक

घ. भाववाचक

ङ. क्रियावाचक

क. कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय— जिन प्रत्ययों से बने शब्दों से कार्य करने वाले अर्थात कर्ता (doer) का बोध हो, उन्हें कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय कहा जाता है; जैसे—

स्वमूल्यांकन-पत्र

वस्तुपरक प्रश्न (MCQs)

1. नीचे चार-चार शब्द दिए गए हैं, इनमें से कोई एक शब्द ऐसा है जिसमें प्रत्यय का योग नहीं है। प्रत्यय शब्द का चयन कर (✓) का निशान लगाइए—

i.	क. पढ़ाई ☐	ख. भूखा ☐	ग. सामान्यतया ☐	घ. अध्यात्म
ii.	क. नीति ☐	ख. रचित ☐	ग. नैतिक ☐	घ. पैतृक
iii.	क. बोली ☐	ख. भाषा ☐	ग. पिपासा ☐	घ. पितृ
iv.	क. अंकुर ☐	ख. फलित ☐	ग. संबंधित ☐	घ. रचित
v.	क. खटास ☐	ख. दृश्यमान ☐	ग. गरम ☐	घ. पूज्य
vi.	क. आदमखोर ☐	ख. भेड़िया ☐	ग. बकरी ☐	घ. बूढ़ा
vii.	क. अध्यापक ☐	ख. गायिका ☐	ग. नकलची ☐	घ. प्रिया
viii.	क. भवदीय ☐	ख. पांडित्य ☐	ग. ग्राम्य ☐	घ. पुत्र
ix.	क. बलिष्ठ ☐	ख. गरिष्ठ ☐	ग. प्रेम ☐	घ. भारतीय
x.	क. दवाखाना ☐	ख. तोपची ☐	ग. सेठानी ☐	घ. धीर
xi.	क. बुढ़िया ☐	ख. कमरबंद ☐	ग. नशा ☐	घ. ठंडक
xii.	क. राष्ट्र ☐	ख. कुलीन ☐	ग. ग्रामीण ☐	घ. सुंदरी

2. निर्देशानुसार उत्तर छाँटकर (✓) का निशान लगाइए—

i. 'पुराण' शब्द में 'इक' प्रत्यय लगाने से बना शब्द है?

क. पुराणिक ☐ ख. पराणिक ☐ ग. पौराणिक ☐ घ. पैराणिक

ii. 'एक' में 'हरा' प्रत्यय लगने से बना शब्द है?

क. एकहरा ☐ ख. एकेरा ☐ ग. अकेला ☐ घ. इकहरा

iii. 'लकड़ी' शब्द में हारा प्रत्यय जुड़ने से बना शब्द है?

क. लकड़ीहारा ☐ ख. लकड़ीवाला ☐ ग. लकड़वाला ☐ घ. लकड़हारा

iv. 'रक्तिम' शब्द में लगा प्रत्यय है?

क. रक्त ☐ ख. इम ☐ ग. म ☐ घ. तिम

v. 'साँप' में 'ओला' प्रत्यय लगने से बना शब्द है—

क. साँपोला ☐ ख. संपोला ☐ ग. साँपला ☐ घ. सँपोला

vi. 'बूढ़ा' शब्द में 'पा' प्रत्यय लगने से बना शब्द है

क. बूढ़ापा ☐ ख. बुढ़ापा ☐ ग. बुढ़पा ☐ घ. बुढ़पा

vii. 'आनंदित' शब्द में निहित प्रत्यय है—

क. दित ☐ ख. त ☐ ग. आ ☐ घ. इत

viii. 'खेल' शब्द में आड़ी प्रत्यय जुड़ने से बनता है—

क. खिलाड़ी ☐ ख. खेलाड़ी ☐ ग. खिलड़ी ☐ घ. खेलआड़ी

ix. 'गायक' शब्द में कौन-सा प्रत्यय है?

क. गै ☐ ख. यक ☐ ग. अक ☐ घ. क

Scanned with OKEN Scanner

7 समास

Compound

शब्दों का निर्माण अनेक तरीकों से होता है। कुछ उपसर्ग-प्रत्यय से बनते हैं तो कुछ संधि से निर्मित होते हैं। कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनकी रचना ऐसे दो शब्दों से होती है जिनमें कोई संबंध होता है या हो सकता है; जैसे— बैल की गाड़ी, यहाँ बैल और गाड़ी में संबंध है।

बैल की गाड़ी
बैलगाड़ी (बैल + गाड़ी)

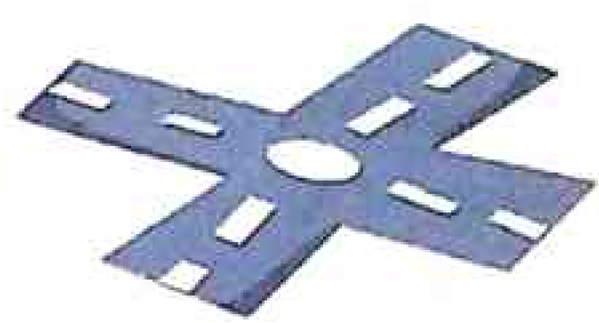

चार राहों का समूह
चौराहा (चार + राह)

नीला है जो कमल
नीलकमल (नील + कमल)

चित्रों के नीचे दिए गए शब्दों को संक्षिप्त करके नए शब्द बनाए गए हैं। इसी शब्द-रचना विधि को समास कहते हैं।

दो या दो से अधिक शब्दों को संक्षिप्त (छोटा) करके नए शब्द बनाने की विधि को समास कहते हैं।

उपर्युक्त उदाहरणों में दो-दो शब्द हैं। पहले शब्द को **पूर्वपद** और दूसरे शब्द को **उत्तरपद** कहते हैं; जैसे— इन उदाहरणों में **बैल, चार** और **नील** पूर्वपद हैं तथा **गाड़ी, राह** और **कमल** उत्तर पद हैं।

समस्तपद — समास-रचना से बना हुआ शब्द समस्तपद अथवा सामासिक पद कहा जाता है; जैसे— गंगाजल समस्तपद है।

समास-विग्रह — समस्तपद को अलग-अलग करने की विधि को समास-विग्रह कहते हैं; जैसे— गंगा का जल।

समास के भेद

समास के छह भेद हैं—

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. द्वंद्व समास
6. बहुव्रीहि समास

Scanned with OKEN Scanner

1. **अव्ययीभाव समास** — जिस समस्तपद का पहला पद अव्यय हो, मुख्य या प्रधान हो और समस्त पद क्रियाविशेषण का काम करे तो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। अव्ययीभाव समास का पहला पद अधिकतर उपसर्ग होता है; जैसे आ, बे, प्रति, यथा आदि।

यथाशक्ति
शक्ति के अनुसार

भरपेट
पेट भरकर

समस्तपद	समास-विग्रह	समस्तपद	समास-विग्रह
प्रत्येक	एक-एक	आजन्म	जन्म से लेकर
अनजान	बिना जाने	आजीवन	जीवन भर
यथासमय	समय के अनुसार	भरपेट	पेट भरकर
रातोंरात	रात ही रात में	बेखटके	बिना खटके के
प्रतिदिन	प्रत्येक दिन/हर दिन	प्रतिक्षण	प्रत्येक क्षण/हर क्षण

2. **तत्पुरुष समास** — जिस समस्तपद का पूर्वपद गौण (कम महत्वपूर्ण) हो और उत्तर पद मुख्य या प्रधान हो, उसे तत्पुरुष समास कहा जाता है; जैसे—

घुड़सवार
घोड़े पर सवार

हस्तलिखित
हाथ से लिखा हुआ

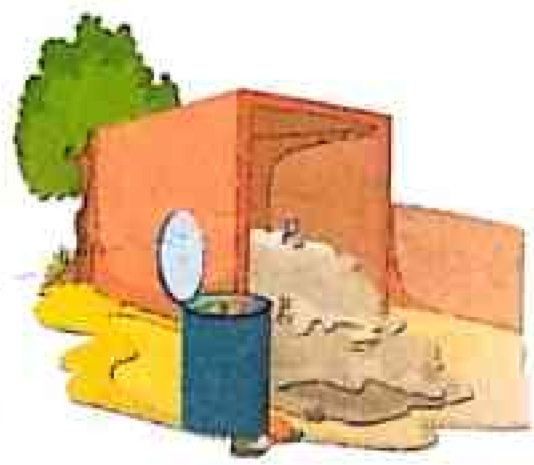

कूड़ाघर
कूड़े के लिए घर

इसमें समस्तपद का विग्रह करने पर कारक-चिह्नों (विभक्तियों) का प्रयोग होता है; जैसे— पर, से, क आदि। लेकिन समस्तपद में इनका लोप हो जाता है, जैसा कि उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट हो रहा है।

कारक-चिह्नों की दृष्टि से तत्पुरुष के छह भेद होते हैं—

i. कर्म तत्पुरुष समास ii. करण तत्पुरुष समास iii. संप्रदान तत्पुरुष समास
iv. अपादान तत्पुरुष समास v. संबंध तत्पुरुष समास vi. अधिकरण तत्पुरुष समास

कर्ता कारक और संबोधन कारक में तत्पुरुष समास नहीं होता।

Scanned with OKEN Scanner

5. **द्वंद्व समास** — द्वंद्व शब्द का अर्थ है— जोड़ा या युग्म। जिस समस्तपद में दोनों पद प्रधान हों, भी पद गौण (कम महत्वपूर्ण) न हो, उसे द्वंद्व समास कहते हैं। इन समस्तपदों का विग्रह करने पर या, अथवा समुच्चयबोधक में से किसी एक का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

भाई-बहन
भाई और बहन

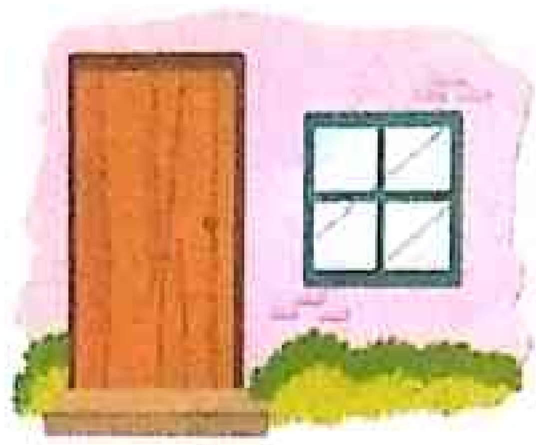

खिड़की-दरवाज़ा
खिड़की अथवा दरवाज़ा

माता-पिता
माता और पिता

अन्य शब्द भी जानिए—

समस्तपद	समास-विग्रह	समस्तपद	समास-विग्रह
रात-दिन	रात और दिन	बच्चे-बूढ़े	बच्चे और बूढ़े
घी-शक्कर	घी और शक्कर	पाप-पुण्य	पाप और पुण्य
दाल-रोटी	दाल और रोटी	जल-वायु	जल और वायु
भला-बुरा	भला और बुरा	हानि-लाभ	हानि और लाभ
हार-जीत	हार या जीत	खरा-खोटा	खरा या खोटा
अन्न-जल	अन्न और जल	दूध-दही	दूध और दही
नदी-नाले	नदी और नाले	गरम-ठंडा	गरम या ठंडा
लोभ-मोह	लोभ और मोह	भीम-अर्जुन	भीम और अर्जुन
ऊपर-नीचे	ऊपर या नीचे	राधा-कृष्ण	राधा और कृष्ण
देश-विदेश	देश या विदेश	गुण-दोष	गुण और दोष

6. **बहुव्रीहि समास** — जिस समस्तपद में दोनों ही पद गौण होते हैं, दोनों मिलकर किसी तीसरे पद के विष में बताते हैं और वह तीसरा पद ही प्रधान होता है, वह बहुव्रीहि समास कहा जाता है; जैसे—

गिरिधर — गिरि को धारण करने वाले अर्थात कृष्ण

वीणापाणि — वीणा है पाणि (हाथ) में जिसके अर्थात सरस्वती

चंद्रशेखर — चाँद है शिखर पर जिसके अर्थात शिव

उपर्युक्त उदाहरणों में आए शब्द अपने मूल अर्थ को छोड़कर क्रमशः कृष्ण, सरस्वती और शिव के बारे में बता रहे हैं। अतः इनमें बहुव्रीहि समास होगा। इसके विग्रह में समस्तपद का अर्थ लिखकर 'अर्थात' के पश्चात तीसरा पद लिखा जाता है।

Scanned with OKEN Scanner

कुछ अन्य उदाहरण भी जानिए—

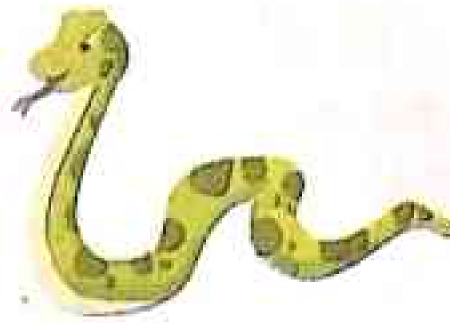

समस्तपद	समास-विग्रह
दशानन	दस हैं आनन जिसके अर्थात रावण
घनश्याम	जो घन के समान श्याम है अर्थात कृष्ण
चक्रधर	चक्र को धारण करने वाला अर्थात कृष्ण या विष्णु
मेघनाद	मेघ के समान नाद है जिसका अर्थात रावणपुत्र
तिरंगा	तीन रंग हैं जिसमें अर्थात भारत का झंडा
त्रिलोचन	तीन लोचन हैं जिसके अर्थात शिव
गजानन	गज के समान आनन/मुख वाला अर्थात गणेश
दीर्घबाहु	दीर्घ (बड़ी) बाँहें हैं जिसकी अर्थात विष्णु
षडानन	षड (छह) सिर वाला अर्थात कार्तिकेय
विषधर	विष को धारण करने वाला अर्थात साँप
सुलोचना	सुंदर हैं लोचन जिसके अर्थात स्त्री विशेष
निशाचर	निशा (रात) में विचरण करता है जो अर्थात राक्षस
बारहसिंगा	बारह हैं सींग जिसके अर्थात एक विशेष जानवर
लंबोदर	लंबा है उदर (पेट) जिसका अर्थात गणेश
महावीर	महान है जो वीर अर्थात हनुमान
नीलकंठ	नीला है कंठ जिसका अर्थात शिव
पद्मासना	पद्म (कमल) है आसन जिसका अर्थात लक्ष्मी

संकेत — इस समास से बने अधिकतर शब्द पौराणिक पात्रों के लिए प्रयोग किए जाते हैं।

यह भी जानो

समासों में अंतर

कर्मधारय और बहुव्रीहि— कर्मधारय समास में विशेषण और विशेष्य अथवा उपमेय-उपमान का संबंध होता है; जैसे—

विद्याधन — विद्या रूपी धन

इसमें विद्या को धन के समान बताया गया है। यहाँ विद्या उपमेय और धन उपमान है, इसलिए यह कर्मधारय समास है।

बहुव्रीहि समास में समस्तपद के दोनों पदों में विशेषण-विशेष्य का संबंध नहीं होता है अपितु वह समस्तपद ही किसी अन्य संज्ञा अथवा किसी तीसरे के लिए आता है; जैसे—

Scanned with OKEN Scanner

स्वमूल्यांकन-पत्र

वस्तुपरक प्रश्न (MCQs)

❀ निर्देशानुसार उत्तर छाँटिए—

i. 'राष्ट्रपति' तत्पुरुष समास का कौन-सा उदाहरण है?

क. कर्म तत्पुरुष ☐ ख. करण तत्पुरुष ☐ ग. संबंध तत्पुरुष ☐ घ. संप्रदान तत्पुरुष ☐

ii. 'यथाशीघ्र' किस समास का उदाहरण है?

क. अव्ययीभाव ☐ ख. कर्मधारय ☐ ग. द्विगु ☐ घ. द्वंद्व ☐

iii. 'जीवन भर' के लिए समस्तपद होगा—

क. जीवन ☐ ख. जमाना ☐ ग. आजीवन ☐ घ. जीवन तक ☐

iv. 'बातोंबात' का समास-विग्रह है—

क. बातों में ☐ ख. बात ही बात में ☐ ग. बात से बात ☐ घ. बात की बात ☐

v. किस समास का पहला पद अव्यय तथा प्रधान होता है?

क. अव्ययीभाव ☐ ख. द्विगु ☐ ग. बहुव्रीहि ☐ घ. द्वंद्व ☐

vi. किस समास में मूल शब्द के आगे उपसर्ग लगाकर नए पद बनाए जाते है?

क. द्वंद्व ☐ ख. तत्पुरुष ☐ ग. कर्मधारय ☐ घ. अव्ययीभाव ☐

vii. तत्पुरुष समास का कौन-सा पद प्रधान होता है?

क. प्रथम ☐ ख. पूर्व ☐ ग. उत्तर ☐ घ. बीच का ☐

viii. 'तुलसीकृत' का समास-विग्रह होगा—

क. तुलसी द्वारा कृत ☐ ख. तुलसी का कृत ☐

ग. तुलसी में कृत ☐ घ. तुलसी के लिए कृत ☐

ix. 'मनचाहा' में कौन-सा समास है?

क. कर्म तत्पुरुष ☐ ख. करण तत्पुरुष ☐ ग. संप्रदान तत्पुरुष ☐ घ. संबंध तत्पुरुष ☐

x. 'देशभक्ति' का विग्रह होगा—

क. देश की भक्ति ☐ ख. देश में भक्ति ☐ ग. देश से भक्ति ☐ घ. देश के लिए भक्ति ☐

xi. 'रोगमुक्त' में कौन-सा समास है?

क. अव्ययीभाव ☐ ख. तत्पुरुष ☐ ग. द्वंद्व ☐ घ. द्विगु ☐

xii. किस समास में 'विशेषण-विशेष्य' व 'उपमेय-उपमान' का संबंध होता है?

क. द्विगु ☐ ख. तत्पुरुष ☐ ग. कर्मधारय ☐ घ. द्वंद्व ☐

Scanned with OKEN Scanner